International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-05-2024, Accepted: 24-05-2024, Published: 15-06-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 17-19

भक्तिकालीन काव्य के उदय की परिस्थितियाँ

तबस्सुम खान[1], रामअवध यादव[2]
[1] अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
चौदहवीं सदी के अन्त तक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी। रासो काव्य नाथ पंथी साहित्य, महाराष्ट्र में उदय होती हुई निर्गुण भक्तिधारा अमीर खुसरों का लोक मनोरंजनकारी साहित्य तथा विद्यापति की शृंगारिक धारा उत्तर भारत के अनेक प्रदेशों में हिन्दी भाषा के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कर चुकी थी। आदिकाल की वीरता और शृंगार से परिपूर्ण साहित्य से एकदम भिन्न इस काल के साहित्य में भक्ति की शान्त निर्झणी बहती है। कोई भी साहित्यिक प्रवृत्ति यूं ही अचानक विकसित नहीं होती, उसके पीछे कई सारे प्रमुख कारण कई शक्तियाँ और तमाम परिस्थितियाँ सक्रिय रहती हैं। साहित्य भी इनसे अवश्य प्रभावित होता है और कालान्तर में एक नया स्वरूप ग्रहण करता है। लगभग 300 वर्षों के भक्ति साहित्य का सृजन कोई सहज, सरल घटना नहीं थी। तत्कालीन इतिहास और समाज पर नजर डाले तो स्पष्ट होता है कि इसके पीछे कोई एक नहीं अनेक परिस्थितियाँ सक्रिय थीं। संक्षेप में देखें तो भक्तिकाल के काव्य के उदय में निम्नांकित शक्तियाँ सामने आती हैं। भक्तिकाल का काव्य सामाजिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। एक तरफ परम्परावादी साहित्यिक लोग अपनी परम्पराओं को बनाये रखने के पक्ष में थे। वीरगाथाकाल के अधिकांश कवि राजाश्रित थे और अपने–अपने महाराजाओं की प्रशंसा में काव्य रचना किया करते थे। यह कवि अक्सर अपने राजाओं का उत्साहवर्धन युद्ध के दौरान काव्य के माध्यम से करते थे। कुछ परम्परावादी लोग अपनी परम्पराओं को बनाये रखने के पक्ष में थे तो दूसरी ओर नव इस्लाम के हितैशी लोग स्वयं को प्रगतिशील बताकर समाज में बदलाव लाना चाहते थे। तत्कालीन कवियों की साहित्य सर्जना उक्त परिस्थितियों से प्रभावित थी और उनकी रचनाओं में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भक्ति आंदोंलन के फलस्वरूप एक नया जीवन दर्शन विकसित हुआ, अभिनव वेदान्त का समुदय हुआ, जिसका तत्व दर्शन, धर्म दर्शन, आकार दर्शन और सामाजिक दर्शन प्राचीन वेदांग से भिन्न और युगीन सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल था। इस साहित्य में स्वीकृत सामाजिक मूल्यों के स्वीकार के बदले युवन के अनुभवों, नैतिक मूल्यों को विकसित करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। निर्गुण भक्त कवि शास्त्र से अधिक अनुभव को महत्व देते थे क्योंकि शास्त्र से सत्य का साक्षात्कार संभव नहीं था। यहां प्रश्न यह उठता है कि नये भक्तिकालीन काव्य का धार्मिक, सांस्कृतिक आंदोलन दक्षिण भारत में ही क्यों हुआ।

मूल शब्दः भक्तिकालीन, उदय, परिस्थितियाँ, समन्वयवाद, विचारधारा, निर्गुण भक्ति समन्वय

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन की शुरूआत सर्वप्रथम दक्षिण के आलवार तथा नवनार संतों द्वारा की गयी। बारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रामानन्द द्वारा यह आंदोलन दक्षिण से उत्तर भारत में लाया गया। इस आंदोलन को चौतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक प्रखरता प्रदान की। भक्ति आंदोलन का उद्देश्य था कि हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार तथा इस्लाम तथा हिन्दू धर्म में समन्वय स्थापित करना। अपने उद्देश्यो में यह आंदोलन काफी हद तक सफल रहा। इस आंदोलन से प्रभावित होकर भक्तिकालीन काव्य का उदय हुआ और यही कारण था कि हिन्दू मुस्लिम समन्वय की भावना इस समय के काव्य में विद्यमान है। मुस्लिमों के बर्बर शासन से कुंठित एवं उनके अत्याचारों से त्रस्त हिन्दू जनता ने ईश्वर की शरण में अपने को अधिक सुरक्षित महसूस कर भक्तिमार्ग का सहारा लिया। हिन्दू एवं मुस्लिम जनता के आपस में सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्पर्क से दोनों के मध्य सद्भाव एवं सहानुभूति की भावना का विकास हुआ। इस कारण से भी भक्तिकालीन काव्य के उदय में सहयोग मिला। मुस्लिम शासकों द्वारा मूर्तियों को नष्ट एवं अपवित्र कर देने के कारण बिना मूर्ति और मंदिर के ईश्वर की आराधना के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ा। जिसके लिए उन्हें भक्ति का आलम्बन ग्रहण करना पड़ा। तत्कालीन समाज की शोषणकारी व्यवस्था के कारण निचले वर्णों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। भक्त संतों द्वारा दिये गये सामाजिक, सौहार्द और सद्भाव के संदेशों ने लोगों को आकर्षित किया। हिन्दुओं ने सूफियों की तरह एकेश्वरवाद में विश्वास करते हुए ऊंच–नीच एवं जांतिपांति का विरोध किया। शंकराचार्य का ज्ञानमार्ग व अद्वैतवाद सिद्धान्त अब साधारण जनता के लिए बोधगम्य नहीं रह गया था। भक्त संतों की तरह सूफी संतों ने एकता, सद्भाव एवं भाइचारे को बढ़ावा दिया। सूफी आंदोलन ने समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। संत कवियों की तरह जो कि हिन्दू धर्म के भीतर अंधविश्वासों को तोड़ने में लगे हुये थे, सूफियों ने भी इस्लाम के भीतर नये उदारवादी दृष्टिकोण का प्रचार किया। मुस्लिम शासन और इस्लाम के प्रभाव ने हिन्दू जनता के दिल में भय पैदा कर दिया। कुछ कट्टर शासकों के आधीन हिन्दुओं को अत्याधिक कष्ट सहना पड़ा। वे अपने उदासीन हृदयों को ठीक करने के लिए कुछ सांत्वना चाहते थे। सूफीवाद के प्रभाव नें भी भक्तिकालीन काव्य के उदय में सहयोग किया। हिन्दूधर्म में कुरीतियों ने अपना अड्डा जमा लिया था। ऐसी अनेक कुरीतियां विद्यमान थी, जिनके चलते हिन्दू आम जनमानस में असंतोष व्याप्त था। उदाहरण के रूप में शोषित दबे कुचलों को मंदिर में प्रवेश निषेध था। उनके मंदिर में जाने से मंदिर अपवित्र हो जाता था। उन्हें अछूत कहकर तिरस्कृत किया जाता था। हिन्दू धर्म में छुआछूत अत्यधिक मात्रा में फैल चुका था। ऊंची जाति के लोग निम्न जातियों के लोगों को बड़े हेय दृष्टि से देखते थे। उन्हें अपने साथ खान–पान हेत् व्यवहार में सम्मिलित नहीं करते थे। उन्हें उनके बर्तन तक छूने का अधिकार नहीं था और न ही उनके बराबर चारपाई पर बैठने का। इसप्रकार से हिन्दू धर्म में अनेक कुरीतियां विद्यमान थीं। भक्तिकालीन काव्य के उदय में यह भी एक प्रमुख कारण बनी। हिन्दू संत महत्माओं में इस्लाम के फैलने का भय भी विद्यमान

था। इस्लाम एक ईश्वर को मान्यता प्रदान करता है। इस्लाम में छुआछूत का भेदभाव नहीं है और न ही ऊंच–नीच का द्वंद्व है। वहां पर सभी एक ही ईश्वर के बंदे हैं। खुदा की इबादत करने के लिए सभी को बराबर का अधिकार है। कोई छोटा–बड़ा नहीं है। इन्हीं कारणों से इस्लाम बहुत तेजी से फैल रहा था। ठीक इसके विपरीत सनातन धर्म में अनेक पंथ हैं, अनेक देव हैं और अनेक पूंजा पद्धतियां हैं। भक्तिकाल तक आते–आते लोगों ने इसे इतना संकीर्ण एवं जटिल बना दिया था कि आमजनता को धर्म के नाम पर घुटन महसूस होने लगी थी। धर्म के नाम पर इन लोगों के साथ भेदभाव की रणनीति अपनाई जाने लगी। संत महत्माओं ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुये एक नई विचारधारा को जनमानस के सामने प्रस्तुत किया। जिसे भक्ति आंदोलन के रूप में देखा जाने लगा।

भक्तिकाल के बदलते स्वरूप. जिस जनमानस का धर्म के नाम पर शोषण होता था उसे राहत की सांस लेने का अवसर प्राप्त हुआ। आम जनमानस ने भक्ति आंदोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। भक्ति के द्वार सबके लिए खुले थे। चाहे वह प्राणी किसी भी जाति वय एवं लिंग का हो। भक्त कवियों संतों ने अपने विचारों को काव्य के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करने लगे। जिन संतों को पढ़ना–लिखना नहीं आता था उनके शिष्यों ने उनकी विचारधारा को काव्य रूप में सम्मिलित करके आमजनता तक पहुंचाने का पूरा प्रयास किया। इनमें कबीर का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। जिनके परमप्रिय शिष्य धर्मदास ने उनके द्वारा कहे गये साखी शबद, रमैनी को संकलित कर जन–जन तक पहुंचाने का कार्य किया। धार्मिक कर्मकाण्डों में इतनी अधिक जटिलता आ चुकी थी कि एक साधारण आदमी के वश के बाहर था, उन कर्मकाण्डों का अनुष्ठान करना। पंडित, पुरोहित, कर्मकाण्डों के माध्यम से भोलीभाली जनता का आर्थिक शोषण कर रहे थे। जनमानस कर्मकाण्डों के नाम पर लुट रहा था। अनेक कर्मकाण्डों में बलि प्रथा का भी प्रचलन था। अंधविश्वास तेजी से फैल रहा था। लोग धर्म के नाम पर भ्रमित होते चले जा रहे थे। ऐसी स्थिति में संत कवियों, मनीषियों ने इन आडम्बरों के विरूद्ध आवाज उठायी और अपने तर्कों के माध्यम से विरोध किया। इस विरोध में संत कवियों ने जो कुछ भी कहा उसने भक्तिकालीन काव्य का रूप धारण कर लिया। इसप्रकार से उपरोक्त तथ्य भी भक्तिकालीन काव्य के उदय के कारण बने। भारतीय समाज में विश्रृंखलता मध्यकाल में ही प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दू जनता के प्राचीन संस्कार परिवर्तित होने लगे थे। वर्णाश्रम व्यवस्था समाज में थी परन्तु उच्चवर्ग के प्रति आदर भाव समाप्त हो चला था। जातिप्रथा अपने चरम पर थी। समाज में पर्दाप्रथा, बालविवाह एवं सतीप्रथा का प्रचलन हो गया था। समाज कई जातियों में विभक्त था। जातियों में भी कई उपजातियां थीं। उच्चजाति के लोग निम्न जातियों के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन्हें समाज में आदर का भाव नहीं प्राप्त था। समाज दो वर्गो में विभाजित था। प्रथम वर्ग के अन्तर्गत राजा, सामन्त, सरदार, अमीर, सेठ साहूकार थे, जो अत्यन्त विलासी थे। दूसरे वर्ग में गरीब, मजदूर किसान थे। जिन्हें उचित पारिश्रमिक भी नहीं प्राप्त होता था। निश्चित रूप से इन परिस्थितियों ने भक्तिकालीन काव्य के उदय में उत्प्रेरक का कार्य किया। धर्म में उपासना की विधियां भी अत्यधिक जटिल हो चुकी थी। कुछ उपासना की विधियाँ अत्यधिक खर्चीली थीं। जोकि एक विशेष वर्ग के लिए सुनिश्चित हो चुकी थीं। निम्नवर्ग के लोगों के पास उन उपासनाओं को करने के लिए द्रव्य नहीं था। परिणामस्वरूप संतों, भक्तों ने इन घटनाओं को रोकने के लिए भक्तिकालीन काव्य का प्रचुर मात्रा में सृजन किया। तुलसीदास जी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रीरामचरित मानस में लिखते हैं–

> पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगत जासु सुत होई।।
> नतरू बांझ भलि बादि बिआनी। राम विमुख सुत ते हित जानी।।

भक्तिकालीन काव्य और परिस्थितियाँ–भक्तिकाल के सभी कवि संतों ने अपनी रचनाओं में समन्वयवाद को प्रमुख रूप से रखा है। सूफी संतों की उदार एवं सहिष्णुता की भावना तथा एकेश्वरवाद में उनकी प्रबल निष्ठा भक्तिकाल के उदय में एक प्रमुख कारण बनी। हिन्दू एवं मुस्लिम जनता के आपस में सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्पर्क से दोनों के मध्य सद्भाव, सहानुभूति एवं सहयोग की भावना का विकास हुआ। यह भी भक्तिकालीन काव्य के उदय में एक प्रमुख कारण रहा। तत्कालीन भारतीय समाज की शोषणकारी वर्णव्यवस्था के कारण निचले वर्णों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। यह परिस्थितियाँ भी भक्तिकालीन काव्य के उदय का कारण बनीं। ''मुस्लिम शासकों के बर्बर शासन से कुण्ठित उनके अत्याचारों से त्रस्त हिन्दू जनता ने ईश्वर की शरण में अधिक सुरक्षित महसूस कर भक्ति का सहारा लिया। इस तथ्य ने भी भक्तिकालीन काव्य के उदय में सहयोग किया। तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों, आर्थिक विसंगतियों व धार्मिक उन्माद तथा शोषण की प्रवृत्ति के गिरते नैतिक स्तर ने तथा घटते मानवीय मूल्य भक्तिकालीन काव्य के उदय के प्रमुख कारण सिद्ध हुए।''[1] दक्षिण भारत की स्थिति भिन्न थी। उसे विदेशी आक्रमणकारियों की ज्वाला नहीं झेलनी पड़ी थी। उसी शांत वातावरण में सामन्ती व्यवस्था अधिक प्रतिक्रियावादी रूप धारण करती जा रही थी। धर्म के कर्णधार ब्राह्मण और सामन्त थे। उच्चवर्ग निम्नवर्ग को पशु तुल्य समझने लगा था। इन तथ्यों ने सामाजिक भेदभाव में समाजहित चिंतकों को चिंतित बना दिया, क्योंकि उच्च वर्ग के लोग सभी अन्याय एवं अत्याचार धर्म की आड़ में करते थे। इस एक अधिकार के विरूद्ध प्रबुद्ध वर्ग के लोगों का जो विद्रोही स्वर उठा उसी ने कालान्तर में भक्तिकालीन काव्य के आंदोलन को जन्म दिया। हिन्दी साहित्य का वीरगाथा काल लड़ाई झगड़े का काल था। अशान्ति एवं अव्यवस्था की आंधी चल रही थी। इस काल की रचनाओ में इतिहास प्रसिद्ध चरित नायकों का वर्णन शुद्ध इतिहास की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। इन कवियों द्वारा दिये गये सम्वत् तथा तिथियां इतिहास से मेल नहीं खाती। ऐतिहासिक घटनाक्रम की अपेक्षा कल्पना का बाहुल्य है। आशय यह है कि इन काव्य निर्माताओं में सावधानता की त्रुटि रही है। चारण, भाट आदि कवियों ने केवल अपने आश्रय दाताओं को सर्वोपरि मानकर उनका अतिशयोक्तिपूर्ण तथा कल्पना के आधार पर वर्णन किया है। अन्त में यह कहना उचित होगा कि स्वार्थता के कारण तत्कालीन कवियों ने भारतीय इतिहास के राजा, महराजाओं की ओर ध्यान न देकर निरा साहित्य गढ़ा है। ऐसे साहित्य से जनमानस ऊब चुका था। संत कवि राजाश्रय को छोड़ ईश्वर का आश्रय ग्रहण करने लगे थे। भक्तिकालीन काव्य के उदय में यह भी एक प्रमुख तथ्य हैं। अशान्ति तथा अव्यवस्था की आंधी के पश्चात् शान्ति तथा स्थिरता आना स्वाभाविक है। उस समय हिन्दू, मुसलमान युद्ध से ऊब गये थे। कुछ लोगों को जड़े जमाने की चिन्ता पड़ी थी। अतः हिन्दू–मुसलमान का भेदभाव भूलकर मिलनसार वृत्ति से निकट आ रहे थे और धार्मिक व्यक्तित्व से अलग–अलग जीना चाहते थे। भक्ति द्वारा जीवन जीने की अभिलाषा उत्कर होती गयी और देखते–देखते देश में चारो ओर भक्ति की लहर फैल गयी। भक्ति आंदोलन ने भक्तिकाव्य को जन्म दिया। भक्तिकाल निर्गुण एवं सगुण दो प्रमुख धाराओं में बहकर उनके अन्तर्गत दो–दो उप शाखाएं निकल पड़ी। ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, रामाश्रयी और कृ

ष्णाश्रयी। कबीर, तुलसी, जायसी, सूरदास आदि उच्चकोटि के कवियों द्वारा आदर्श साहित्य की निर्मित हुई। ''तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के साथ–साथ धार्मिक परिस्थितियों ने भक्तिकालीन काव्य के उदय में योगदान दिया। नाथ सिद्ध, योगी, अपनी रहस्यमयी शुष्क वाणी के द्वारा जिस धर्म का प्रचार कर रहे थे उससे आम लोगों के हृदय में धर्म भावना की तारतम्यता नहीं बन पा रही थी।''[2] इसप्रकार उपरोक्त सभी तथ्यों ने भक्तिकालीन काव्य के उदय में सहयोग दिया। ''देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उनके सामने ही देव मन्दिर गिराये जाते थे, देव मूर्तियां तोड़ी जाती थीं, पूज्य पूरूषों का अपमान होता था और वे कुछ भी न कर सकते थे। ऐसी दशा में वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह सके। भारी राजनीतिक उलटफेर के पीछे हिन्दू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी छायी रही, पौरूष से हताश जाति के लिए भगवान की भक्ति और करूणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।''[3] मूलतः भक्ति भावना का यथार्थ रूप भक्तिकाल के कवियों के समक्ष एक महान संघर्ष था, विदेशी विधर्मी आक्रांताओं से अपनी संस्कृति की रक्षा करना, इस संघर्ष में वे विजयी हुए। कबीर और जायसी ने हिन्दू मुस्लिम पार्थक्य को कम किया। सूर ने दोनों को कृष्णलीला के माधुर्य का दर्शन कराकर रहीम और रसखान जैसों को अपना अनुगामी बनाया और तुलसी ने इन सबसे आगे बढ़कर मानस की रचना द्वारा चरित्र को ऊपर उठाने का महान कार्य किया। इस समय उच्च हिन्दू वर्ग संस्कृत का अध्ययन करते थे। फारसी राज भाषा थी। कुछ हिन्दुओं ने रोजगार के लिए इस भाषा को सीखा भी। हाट, बाजार तथा सेवा में आम बोलचाल की भाषा उर्दू के रूप में विकसित हो रही थी। पहले की भाषा अवधी और व्रज बनती जा रही थी। संत कवियों ने बोलचाल की भाषा को महत्व दिया तथा उनकी भाषा सधुक्कड़ी या खिचड़ी भाषा कहलाने लगी। भक्तिकाल में प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य, गीत काव्य लिखे गये। इस युग के अधिकांश कवि भक्त कवि थे तथा धर्म और भक्ति को आधार बनाकर काव्य रचनायें लिख रहे थे। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, रसखान, मीराबाई, नानक, रैदास, देश के महान कवि हुये हैं। ''किसी भी देश की समृद्धि अध्यात्मिक संस्कृ त का अनुमान उस देश के महान सत्साहित्य के भण्डार से लगाया जाता है। जो युगों–युगों तक सूर्य की किरणों की भांति आने वाली हर पीढ़ी को सन्मार्ग की ओर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा देते हैं।''[4] भक्तिकालीन साहित्य में यह सारे तत्व विद्यमान हैं।

निष्कर्ष

भक्तिकालीन साहित्य को देखकर यह कहा जा सकता है कि जिसने न केवल धर्म की व्याख्या की बल्कि समाज को सुख–शान्ति प्रदान की। यही कारण है कि भक्तिकालीन साहित्य हृदय, मन और आत्मा की भूंख को शान्त करता है तथा भटके हुए इंसान को सही मार्ग दिखाने का कार्य करता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 जगदीश कुमार प्रजापति, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रवृत्यात्मक अध्ययन भवदीय प्रकाशन, सिंगारहार्ट, अयोध्या फैजाबाद, 224123 उ0प्र0 प्रथम संस्करण पृष्ठ सं0 62, 2011
2. डॉ0 नामदेव उतकर, हिन्दी साहित्य की युगीन प्रवृत्तियां चंदलोक प्रकाशन 128/106, जी ब्लाक किदवई नगर, कानपुर 208011 प्रथम संस्करण पृष्ठ सं0 40, 2002
3. डॉ0 अशोक तिवारी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन आगरा, 282003, उ0प्र0, पृष्ठ सं0 76
4. डॉ0 जगदीश कुमार प्रजापति, साहित्यिक निबन्ध, भवदीय प्रकाशन, सिंगारहार्ट, अयोध्या फैजाबाद, 224123 उ0प्र0, पृष्ठ सं0, 180, प्रथम संस्करण 2011